भारत में तुर्क सत्ता की स्थापना

कुतुबुद्दीन ऐबक एवं इल्तुतमिश

भाग - 1

B. A - III (Hons), History, Paper - V

BY

Dr. Md. Neyaz Hussain
Associate Prof. & Head
PG Dept. of History
Maharaja College,
VKSU, ARA (BIHAR)

Scanned with CamScanner

दिल्ली सल्तनत की स्थापना उत्तरी भारत में तुर्कों के सैनिक अभियानों का प्रत्यक्ष परिणाम थी जो लगभग दो शताब्दी (11वीं से 13वीं) के मध्य में दो चरणों में सम्पन्न हुई। प्रथम चरण गजनवी द्वारा (1000 – 1027) और दूसरा चरण मुहम्मद गौरी (1174 – 1206) के द्वारा सम्पन्न हुआ।

1206 ई० में मुहम्मद गौरी की मृत्यु हो गई। उसके उत्तराधिकारी के रूप में किसी सन्तान के न होने के कारण उसके साम्राज्य को उसके तीन दासों ने आपस में बाँट लिया। ये दास मुहम्मद गौरी के विश्वासपात्र होने के कारण अत्यधिक प्रभावशाली थे और सेना पर इनका नियंत्रण था। अतः इनके द्वारा सत्ता-ग्रहण करने का विशेष विरोध भी सम्भव नहीं था। इन दासों में सबसे वरीय यलदोज था जिसे राजधानी गजनी का नगर प्राप्त हुआ और मध्य-एशियाई साम्राज्य के क्षेत्र भी दूसरा सदस्य कुबाचा था जिसे

सिन्ध और मुल्तान के क्षेत्र प्राप्त हुए। तीसरा सदस्य कुतुबउद्दीन ऐबक था, जो मोहम्मद गोरी के जीवन में ही उत्तरी-भारत में उसके प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत रहा था। उसे उत्तर-भारत के शेष प्रान्त मिले जो पंजाब से बंगाल तक फैले हुए थे और जिनमें आधुनिक राजस्थान के भी कुछ क्षेत्र सम्मिलित थे।

1206 ई० से उत्तरी भारत में तुर्कों के शासन की विधिवत स्थापना हुई और 1290 तक तुर्क सत्ता का उत्तरीय भारत में सुदृढ़ीकरण पूरा हो चुका था। इस अवधि में उत्तरी भारत पर जिन शासकों का अधिकार रहा उनके लिये इतिहासकारों ने विभिन्न नामों का प्रयोग किया है। आरम्भ में उन्हें दासवंश का नाम दिया गया क्योंकि इस वंश का प्रथम शासक कुतुबउद्दीन ऐबक एक दास था और इल्तुतमिश और बलबन जैसे शासक भी दास रह चुके थे; परन्तु दास वंश के नाम पर कई इतिहासकारों ने आपत्ति की।

Scanned with CamScanner

'शरियत' में एक दास को शासक बनने के लिये सक्षम नहीं माना गया है। अतः दास शासकों के समस्त वंश की कल्पना ही अनुचित है। कुछ इतिहासकारों ने इन शासकों को 'इलबरी वंश' का नाम दिया परन्तु ये सभी शासक इलबरी जाति से सम्बन्धित नहीं थे। एक इलबरी तुर्क नहीं था और बलबन तथा उसके वंशजों का इलबरी तुर्क होना भी संदिग्ध है। अतः यह नाम भी मान्यता प्राप्त नहीं कर सका। अजीज अहमद ने इन शासकों को "दिल्ली के आरम्भिक तुर्क शासकों" का नाम दिया क्योंकि उनके अनुसार इन शासकों के लिये 'वंश' शब्द का प्रयोग अनुचित था। वास्तव में इन शासकों में तीन परिवार सम्मिलित थे: एबक, इल्तुतमिश और उसके वंशज तथा बलबन और उसके वंशज। कुछ इतिहासकारों ने संकल्प

मैं इन्हें 'आदि तुर्क' भी कहा परन्तु अन्ततः हबीबुल्लाह द्वारा प्रस्तावित नाम 'ममलूक शासक' ही स्वीकृति पा सका। हबीबुल्लाह ने मध्य कालीन मिस्र के इतिहास से उदाहरण लेकर यह नाम प्रस्तावित किया था। वहाँ दास लेना-पालकों द्वारा स्थापित वंश को ममलूक वंश का नाम दिया गया था। शाब्दिक रूप में ममलूक का अर्थ मालिक के विपरीत था परन्तु ममलूक और दास में एक अन्तर था। दास आमतौर पर जन्मजात दास था, और ममलूक स्वतंत्र माता-पिता की सन्तान था। इस प्रकार 1206 से 1290 तक भारत पर शासन करने वाले शासकों को 'ममलूक' नाम से सम्बोधित किया जाता है।

Scanned with CamScanner

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210)

फ़ख़े मुदब्बिर के अनुसार जब मुइज़्जुद्दीन मुहम्मद ग़ौरी 1205-06 ई० में खोखरों को हराकर ग़ज़नी वापस लौट रहा था, तो उसने औपचारिक रूप से ऐबक को अपने भारतीय क्षेत्रों का प्रतिनिधि नियुक्त किया। उसे 'मलिक' का पद प्रदान किया गया था और उसे 'वली-अहद' या उत्तराधिकारी घोषित किया गया। परंतु मुइज़्जुद्दीन ग़ौरी की मृत्यु के बाद ऐबक को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, उनसे स्पष्ट है कि उसने अपने उद्यम और सैनिक उपलब्धियों के बल पर ही अपनी स्थिति को प्राप्त किया था।

मुइज़्जुद्दीन ग़ौरी अपनी आकस्मिक मृत्यु के कारण अपने उत्तराधिकारी के संबंध में संभवतः निश्चित निर्णय नहीं ले पाया था। उसका कोई पुत्र नहीं था

Scanned with CamScanner

और अपने कुटुंब के किसी व्यक्ति या गैर के किसी जनजातीय सरदार पर वह विश्वास नहीं करता था। उसे अपने शासन की एकता बनाए रखने के लिये और शासन-व्यवस्था स्थापित करने के लिये भी समय नहीं मिला था। ऐसी स्थिति में अपनी सलतनत की रक्षा के लिये वह केवल अपने दासों पर विश्वास करता था। मिनहाज-उस-सिराज के अनुसार उसने एक बार कहा था कि "अन्य सुल्तानों के एक बेटा हो सकता है या दो, मेरे अनेक हजार बेटे हैं, अर्थात मेरे तर्की गुलाम, जो मेरे राज्यों के उत्तराधिकारी होंगे और जो मेरे बाद उन राज्यों के स्वत्व में मेरा नाम सुरक्षित रखेंगे।"

जब मुइज़्ज़ुद्दीन की मृत्यु तो उसके प्रमुख विश्वासपात्रों में से तीन की अर्थात ताजुद्दीन यलदूज, नासिरुद्दीन कुबाचा और कुतुबुद्दीन ऐबक की स्थिति

एक समान थी। अतः इन तीनों में सत्ता के लिये संघर्ष होना अनिवार्य था और योग्यतम व्यक्ति ही उसकी सल्तनत प्राप्त कर सकता था। ऐबक मुइज़्ज़ुद्दीन के विश्वासपात्रों में सबसे योग्य साबित हुआ और वही उसका वास्तविक उत्तराधिकारी बना। परंतु एक स्वतंत्र शासक के रूप में उसे बहुत समय के बाद मान्यता मिली। ग़ज़नी, ग़ौर और बामियान की राजनीतिक समस्याओं के कारण ऐसा संभव हुआ। ऐबक अनौपचारिक रूप से 25 जून, 1206 ई० को गद्दी पर बैठा परंतु उसकी सत्ता को औपचारिक मान्यता और संभवतः नियुक्ति पत्र तीन वर्ष बाद मुइज़्ज़ुद्दीन के वैध ~~उ~~ उत्तराधिकारी महमूद से प्राप्त हुआ। अतः इन वर्षों में उसे मलिक और सिपहसालार की पदवी ही प्राप्त रही थी। संभवतः इसीलिए वह अपने नाम के सिक्के प्रचलित नहीं कर सका।

Scanned with CamScanner